डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 25/4/20

विषय - संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

## कवि दण्डी का परिचय :-

संस्कृत साहित्य के प्रतिष्ठित महाकवियों में दण्डी प्रमुख हैं। विद्वान समालोचकों ने कहा है कि पहले तो केवल एक ही कवि वाल्मीकि थे, व्यास के होने पर दो कवि हो गये तथा दण्डी के होने पर इनकी संख्या तीन हो गई-

जाते जगति वाल्मीकौ कविरित्यभिधाऽभवत् ।
कवी इति ततो व्यासे कवयस्त्वयि दण्डिनि ॥

संस्कृत साहित्य में यदि कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध हैं और भारवि अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं तो दण्डी अपने पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं-

उपमाकालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम् ।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः ॥

## जीवन परिचय :-

'दशकुमारचरितम्' तथा 'काव्यादर्श' के आधार पर दण्डी का दाक्षिणात्य तथा विदर्भ देश निवासी होना प्रकट होता है। उनके द्वारा महाराष्ट्री प्राकृत तथा वैदर्भी शैली की प्रशंसा 'काव्यादर्श' में की गई है। 'दशकुमारचरित' में कलिंग तथा आन्ध्र देशों के उल्लेख, 'कावेरी तीरपत्तन' सदृश शब्दों का प्रयोग तथा दक्षिण भारत में प्रचलित पारिवारिक एवं सामाजिक प्रथाओं के वर्णनों से भी उनका दाक्षिणात्य होना प्रमाणित होता है। 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के आधार पर महाकवि दण्डी

Scanned with CamScanner

का कुछ जीवन-संकेत अवश्य प्राप्त होता है। इनके आधार पर महाकवि दण्डी का सम्बन्ध महाकवि भारवि से निकलता है। भारवि के तीन पुत्रों में से मध्यम पुत्र का नाम मनोरथ था। मनोरथ के चार वेदों के सदृश चार पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें सबसे छोटा वीरदत्त था, जो एक सुयोग्य दार्शनिक था। इसकी स्त्री का नाम गौरी था। इसी से दण्डी का जन्म हुआ था। इनके मातापिता बाल्यकाल में ही स्वर्ग सिधार गये थे। ये काञ्ची में निराश्रय रहा करते थे। एक बार काञ्ची में उपद्रव उपस्थित हो गया। उस समय ये बेचारे जंगलों में मारे-मारे फिरते रहे। शहर में शान्ति हो जाने पर ये पल्लव नरेश की सभा में आ गये तथा उनके सभा कवि होकर ये अपना जीवन-यापन करने लगे। दक्षिण भारत में प्रचलित एक किंवदन्ती से इसकी पुष्टि भी होती है। श्री एम० रंगाचार्य ने एक किंवदन्ती का उल्लेख करते हुए लिखा है कि पल्लव-नरेश के पुत्र को शिक्षा देने के निमित्त ही दण्डी ने 'काव्यादर्श' की रचना की थी। इसके प्राचीन टीकाकार तरुणवाचस्पति के अनुसार दण्डी ने निम्नलिखित प्रहेलिका में काञ्ची के पल्लव नरेशों की ओर संकेत किया है-

नासिक्यमध्या परितश्चतुर्वर्णविभूषिता ।

अस्ति काचित्पुरी यस्यामष्टवर्णाह्वया नृपाः ॥

उक्त आधार पर उनका पल्लव राजा के आश्रय

classmate

Date ______
Page ______

में रहना इतिहास तथा किंवदन्ती दोनों ही के द्वारा सिद्ध हो जाता है। किन्तु भारवि तथा दण्डी के उक्त सम्बन्ध के विषय में अब संशय उत्पन्न होने लगा है। जिस श्लोक के आधार पर भारवि के साथ दण्डी के प्रपितामह दामोदर का एक होना स्वीकार किया जाता था। उक्त श्लोक में पाठभेद मिलने के कारण विद्वानों को अपना मत बदलना पड़ा है। नवीन पाठ निम्न प्रकार है—

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविं प्रभवं गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

पहले 'भारविं' के स्थान पर 'भारविः' था। अब भारविं पाठ मिलता है, जिसका अर्थ है कि भारवि की सहायता से दामोदर की मैत्री विष्णुवर्धन के साथ हो सकी, अतः दामोदर ही दण्डी के प्रपितामह थे, भारवि नहीं।